बरेली में थार प्रेमियों ने शहर में एक अनोखा क्लब 'थारिएंस क्लब बरेली' बनाया है। यह क्लब न केवल थार मालिकों को एक मंच देता है, बल्कि शहर में सामाजिक सरोकारों के लिए अपनी पहचान भी बना रहा है। क्लब में फिलहाल 30 सक्रिय थार संचालक सदस्य जुड़े हुए हैं। इनमें (डाक्टर, सीए और उद्यमी) शामिल हैं।

-महिपाल गंगवार, बरेली

थारिएंस क्लब में महिलाएं भी हैं खूब सक्रिय

क्लब के सचिव सुबोध भारद्वाज बताते हैं कि क्लब में कई महिलाएं सदस्य भी सक्रिय हैं, जो थार खुद चलाती हैं और ऑफ-रोडिंग इवेंट्स में अपना हुनर दिखाती हैं। इससे क्लब का दायरा सिर्फ पुरुषों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह परिवारों के लिए एक सकारात्मक और सुरक्षित मंच बन गया है। वह बताते हैं कि थारिएंस क्लब के सदस्यों का मानना है कि थार ने उन्हें एक नए समुदाय से जोड़ा है। पहले वे सिर्फ गाड़ी तक सीमित थे, लेकिन क्लब से जुड़ने के बाद उन्हें समाजसेवा, नई जगहें देखने और समान विचारधारा वाले लोगों से मिलने का मौका मिला।

थार के शौक को सिर्फ घूमने-फिरने तक सीमित न रखें

थार क्लब के संस्थापक अध्यक्ष राजीव खुराना बताते हैं कि यह क्लब केवल शौक के लिए नहीं, बल्कि समाज में सकारात्मक संदेश देने के लिए बनाया गया है। उनके अनुसार हम चाहते थे कि थार के शौक को सिर्फ घूमने-फिरने तक सीमित न रखा जाए, बल्कि इसे एक जिम्मेदारी से भी जोड़ा जाए। थारिएंस क्लब उतराखंड में नदी वाले स्थानों पर राइडिंग के साथ हर 15 अगस्त को तिरंगा यात्रा निकालने के साथ-साथ समय पर जलसंरक्षण आदि को लेकर सामाजिक अभियान चलाता है, जिसमें सभी 30 थारें एक साथ निकलती हैं।

बरेलियंस का नया टशन
थारिएंस क्लब

बरेली शहर में अब तक 450 से अधिक बिक चुकी हैं थार

स्थानीय डीलरों के अनुसार बरेली में महिंद्रा थार की ऑन-रोड कीमतें वेरिएंट के हिसाब से 15.5 लाख रुपये से 21 लाख रुपये तक जाती हैं, जबकि टॉप मॉडल की कीमत 22 लाख रुपये के करीब पड़ती है। शहर में थार के लॉन्च होने के बाद से अब तक लगभग 450 से अधिक थारें बिक चुकी हैं, जो युवाओं की पसंद का मजबूत संकेत देती हैं। मजेदार बात यह भी है कि थार खरीदने वाले कई युवा पहले से एसयूवी चला रहे थे, लेकिन जब से थार गाड़ी लांच हुई लोग इसे सिर्फ गाड़ी नहीं, बल्कि लाइफस्टाइल मान रहे हैं। खासकर वीकेंड पर यह गाड़ी बरेली के आसपास के हिल स्पॉट्स या नदी किनारे ऑफ-रोडिंग के लिए खूब दिखाई देती है। शहर में शादी-ब्याह के अवसर हों या किसी दोस्त की बर्थडे पार्टी, थार का प्रवेश ही माहौल को अलग बना देता है।

इसलिए बढ़ी थार की लोकप्रियता

थार की लोकप्रियता के पीछे इसके मजबूती और विशेषताएं सबसे बड़ा कारण हैं। मूसाराम इंटरप्राइजेज के प्रबंध निदेशक दिनेश अग्रवाल बताते हैं कि थार में वह सब कुछ है, जो भारतीय सड़क और कठिन रास्तों के लिए जरूरी है। इसका पेट्रोल और डीजल इंजन न केवल दमदार पावर देते हैं, बल्कि हर तरह के रास्ते पर कमाल का परफॉर्मेंस दिखाते हैं। थार को खास इसलिए माना जाता है, क्योंकि यह सिर्फ शहर की गाड़ी नहीं है, बल्कि पहाड़, रेगिस्तान, कीचड़-हर जगह अपनी पकड़ बनाए रखती है। यही नहीं थार का ग्राउंड क्लीयरेंस, चार बाई चार ड्राइव, वॉटर वेडिंग क्षमता और टॉर्क इसे अपनी श्रेणी की अन्य एसयूवी से आगे रखते हैं। इसलिए थार सिर्फ युवा ही नहीं, परिवारों में भी पसंद की जा रही है।

मॉय फर्स्ट राइड

हॉर्न, ब्रेक और हौसलों के बीच मेरा सफर

मैंने जब पहली बार कार चलाना सीखने का निर्णय लिया, तो मन में उत्साह के साथ-साथ डर भी था। बचपन से ही कार चलाते हुए लोगों को देखकर लगता था कि यह कोई बहुत कठिन काम है, जो शायद मेरे बस का नहीं। घर में अक्सर यही सुनने को मिलता था-"तुमसे नहीं होगा", "यह काम पुरुषों का है" या "ऑटो-रिक्शा और टैक्सी ही ठीक हैं।" लेकिन कहीं न कहीं मन में यह इच्छा थी कि मैं भी आत्मनिर्भर बनूं और बिना किसी पर निर्भर हुए खुद गाड़ी चला सकूं।

यह इच्छा मैंने डरते-डरते अपने पति को बताई, तो उन्होंने दो मिनट सोचकर कहा ठीक है, कल सुबह से तुम्हारी कार की क्लास शुरू होगी। पहले दिन जब मैं ड्राइविंग स्कूल पहुंची, तो दिल तेज-तेज धड़क रहा था। इंस्ट्रक्टर ने जब कार की सीट पर बैठने को कहा, तो हाथ-पैर जैसे सुन्न हो गए। स्टेयरिंग पकड़ते ही लगा कि मैं किसी बड़ी जिम्मेदारी को थाम रही हूं। क्लच, ब्रेक और एक्सीलेरेटर तीनों को समझना अपने-आप में एक चुनौती था। शुरुआत में कार बार-बार बंद हो जाती थी और पीछे से हॉर्न की आवाजें आत्मविश्वास को और डगमगा देती थीं।

सबसे मुश्किल था सड़क का डर। सामने से आती गाड़ियां, अचानक मोड़ लेते वाहन और पैदल चलते लोग सब कुछ मुझे घबराहट में डाल देता था। कई बार लगा कि शायद मैं यह सीख ही नहीं पाऊंगी। एक दिन तो गलती से ब्रेक की जगह एक्सीलेरेटर दब गया और इंस्ट्रक्टर को तुरंत कंट्रोल संभालना पड़ा। उस दिन घर आकर मैंने खुद से कहा "बस, अब नहीं।" पर अगले ही पल मन ने समझाया कि डर से भागने से कुछ हासिल नहीं होगा। धीरे-धीरे अभ्यास बढ़ता गया। रोज सुबह थोड़ा जल्दी उठकर ड्राइविंग क्लास के लिए जाना अब मेरी दिनचर्या का हिस्सा बन गया। इंस्ट्रक्टर की सीख और खुद पर भरोसा दोनों ने मेरा आत्मविश्वास बढ़ाया। अब कार कम बंद होती थी और गियर बदलते समय हाथ नहीं कांपते थे। जब पहली बार मैंने बिना किसी मदद के कार स्टार्ट की और कुछ दूरी तक सही तरीके से चला पाई, तो वह खुशी शब्दों में बयान करना मुश्किल है।

कार सीखने का सबसे बड़ा सबक यह था कि सड़क पर धैर्य सबसे जरूरी है। जल्दीबाजी या घबराहट दोनों ही नुकसानदेह हैं। मैंने सीखा कि दूसरों की गलती पर भी संयम बनाए रखना जरूरी है। कई बार पुरुष ड्राइवर ताने मारते या मजाक उड़ाते, लेकिन मैंने खुद को कमजोर नहीं पड़ने दिया। धीरे-धीरे मैं समझने लगी कि आत्मविश्वास ही सबसे बड़ा हथियार है। जिस दिन मैंने ड्राइविंग लाइसेंस टेस्ट पास किया, उस दिन मेरी आंखों में खुशी के आंसू थे। यह सिर्फ एक लाइसेंस नहीं था, बल्कि मेरी आजादी की चाबी थी। अब मैं बच्चों को स्कूल छोड़ने, बाजार जाने या अचानक किसी काम से बाहर निकलने के लिए किसी पर निर्भर नहीं थी। परिवार वालों का नजरिया भी बदल गया। वही लोग, जो पहले मना करते थे, अब गर्व से कहते हैं- "हमारी बेटी बहुत अच्छी ड्राइवर है।"

आज जब मैं खुद कार चलाकर सड़क पर निकलती हूं, तो महसूस होता है कि यह सिर्फ ड्राइविंग नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता का अनुभव है। कार सीखना मेरे लिए एक कौशल ही नहीं, बल्कि आत्मविश्वास, साहस और खुद पर भरोसा करने की सीख भी था। हर महिला को यह अनुभव जरूर लेना चाहिए, क्योंकि जब हम डर को पीछे छोड़कर आगे बढ़ते हैं, तभी हमें अपनी असली ताकत का एहसास होता है।

-डॉ. आरती मोहन
कानपुर

सर्दियों में टायर प्रेशर का रखें ध्यान

यदि आप दोपहिया या कार के मालिक हैं और आपको महसूस हो रहा है कि कड़ाके की इस सर्दी में आपकी गाड़ी के टायरों की हवा कुछ कम हो गई है, तो घबराने की कोई जरूरत नहीं है। ऐसा होना तापमान में गिरावट के कारण बिल्कुल सामान्य प्रक्रिया है। ठंड के मौसम में टायर सिकुड़ने लगते हैं, जिसके कारण उनके भीतर का एयर प्रेशर घट सकता है, लेकिन टायर प्रेशर को नजरअंदाज करना सही नहीं है, क्योंकि इसका सीधा प्रभाव कार या दोपहिया वाहन के संतुलन, सुरक्षा और माइलेज पर पड़ता है। सर्दियों में गाड़ी के टायर का प्रेशर कम न हो, इसके पीछे के सामान्य कारणों और उनसे बचने के आसान उपायों की जानकारी होना बेहद जरूरी है।

टायर प्रेशर घटने का वैज्ञानिक कारण

सर्दी बढ़ने पर टायर अचानक लीक नहीं होने लगते, बल्कि इसके पीछे वैज्ञानिक कारण होता है। कम तापमान में हवा के कणों की गति धीमी हो जाती है और वे कम स्थान घेरते हैं। इसी वजह से जैसे-जैसे तापमान घटता है, टायर के अंदर का प्रेशर भी कम होने लगता है। माना जाता है कि हर 10 डिग्री सेल्सियस तापमान गिरने पर टायर का एयर प्रेशर लगभग 1 पीएसआई (पाउंड प्रति वर्ग इंच) तक घट सकता है।

टायर की रबर का सख्त होना

सर्दियों में टायर की रबर सामान्य से थोड़ा सख्त हो जाती है। इससे टायर की हवा कम नहीं होती, जिससे रबर की लचक घटने से सील वाले हिस्से उतने प्रभावी नहीं रह जाते। यदि टायर में पहले से कहीं मामूली सी लीकेज मौजूद है, तो सर्दियों में हवा का प्रेशर गिरना ज्यादा स्पष्ट रूप से महसूस होने लगता है।

सुरक्षा के लिए उपाय

- **नियमित जांच रखें, सुरक्षा बढ़ाएं-** टायर प्रेशर की नियमित जांच करना बेहद जरूरी है। महीने में कम से कम एक बार और लंबी यात्रा पर निकलने से पहले टायर का प्रेशर अवश्य जांच लें। इसके लिए वाहन में एक पोर्टेबल टायर प्रेशर गेज रखना उपयोगी होता है, जिससे आप स्वयं आसानी से टायर की हवा चेक कर सकते हैं।
- **सही टायर प्रेशर रखें -** टायर में हमेशा वही हवा भरवानी चाहिए, जो वाहन निर्माता कंपनी के मानक हैं। इसकी जानकारी आमतौर पर गाड़ी के ऑनर मैनुअल में या ड्राइवर साइड के दरवाजे के अंदर लगे स्टिकर पर आसानी से मिल जाती है।
- **टेम्परेचर में बदलाव पर नजर रखें :** मौसम में होने वाले तापमान के उतार-चढ़ाव का टायर प्रेशर पर सीधा प्रभाव पड़ता है। इसलिए मौसम के बदलाव और आवश्यकता के अनुसार टायर की हवा को समय-समय पर जांचकर उसे एडजस्ट करते रहना चाहिए।
- **विंटर-ग्रेड टायर करें प्रयोग :** यदि आप ऐसे क्षेत्र में रहते हैं, जहां सर्दियों में कड़ाके की ठंड पड़ती है, तो विंटर-ग्रेड टायर का उपयोग करना अधिक उपयुक्त होता है। ये टायर ठंडे मौसम में बेहतर पकड़ बनाए रखते हैं और वाहन की परफॉर्मेंस को भी बेहतर बनाते हैं।